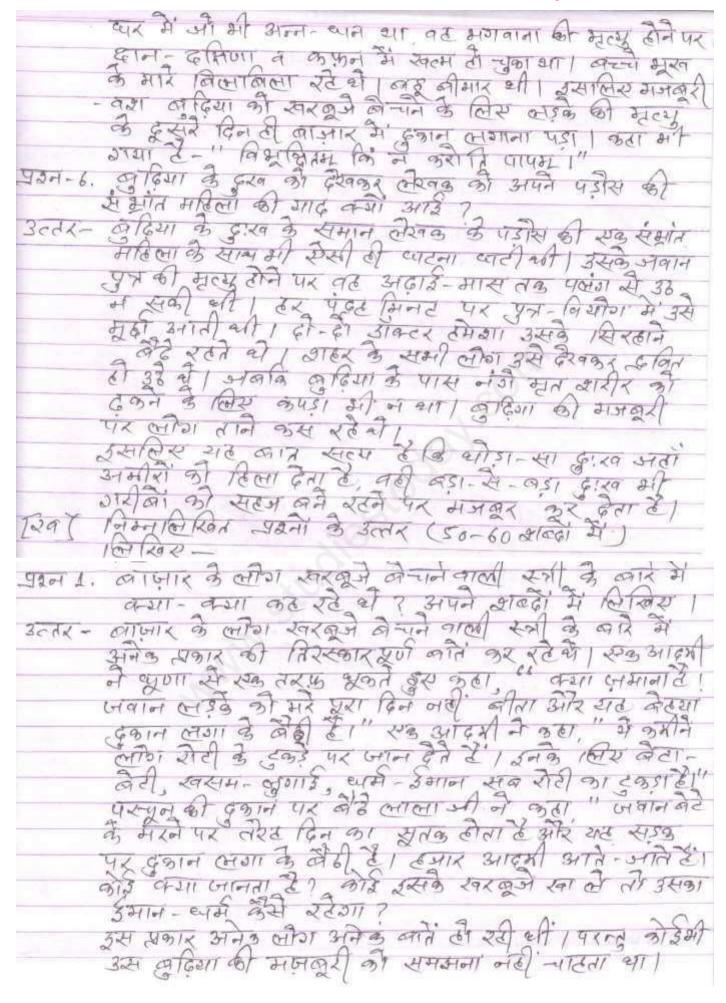
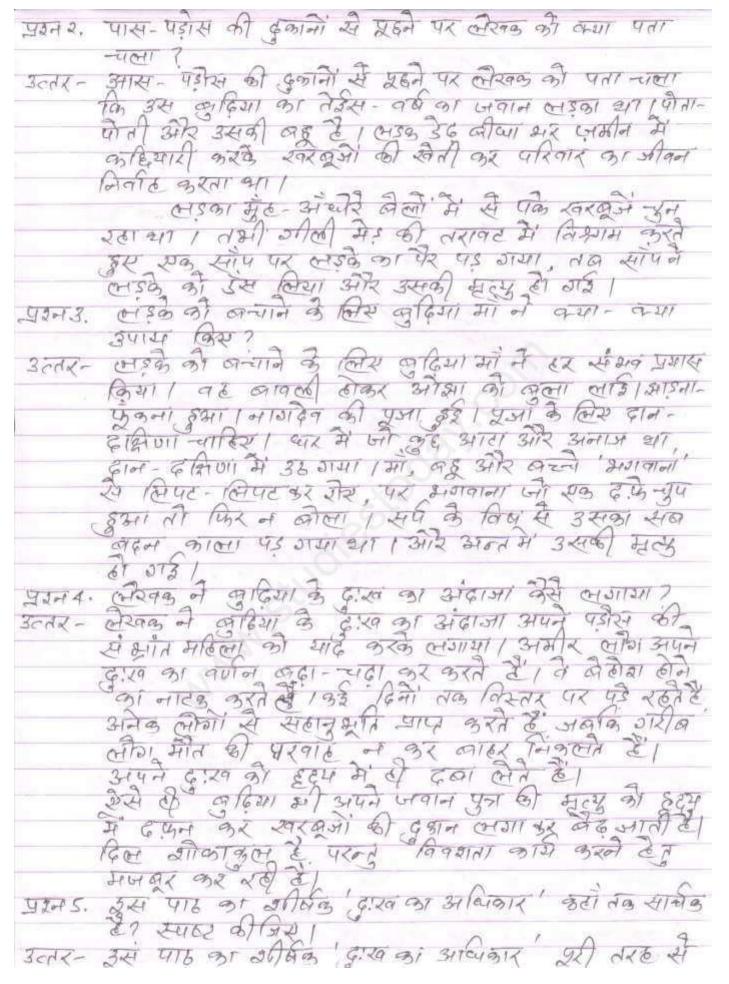
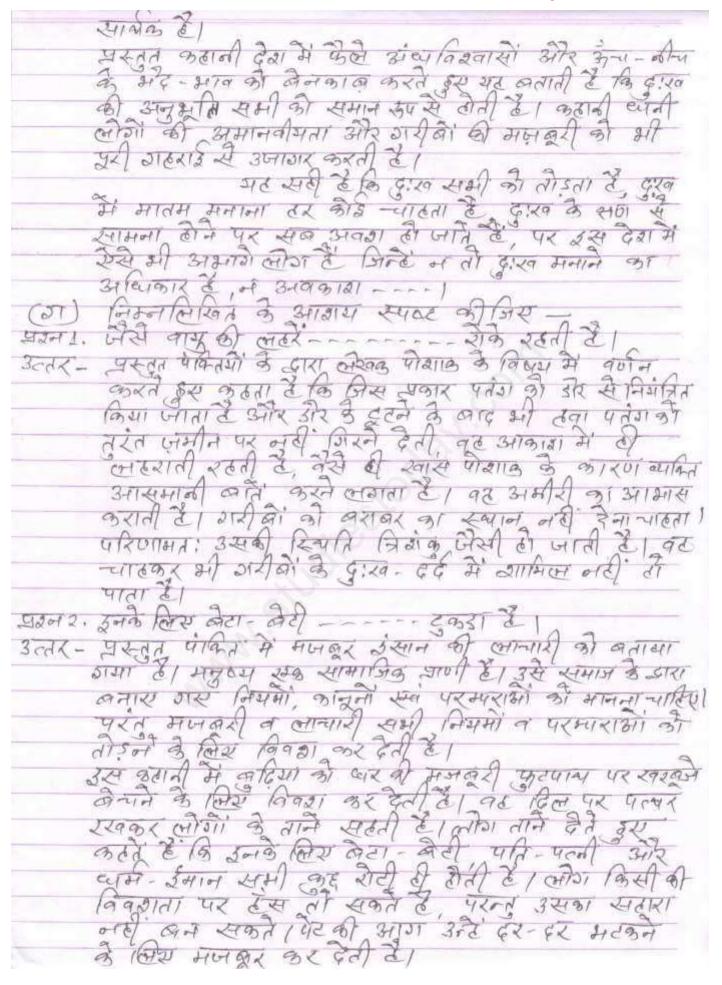
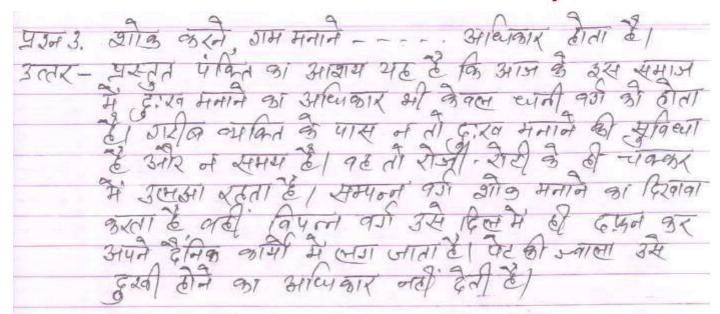
पार का माम - दुःरव का अधिकार लि रिल त (B) निम्निलिरिन, यहनीं के उत्तर (25-30 खांक्हीं में) लिखिए -यवनार. मनुष्य के जीनन में पोशाद का क्या महत्त्व है? उत्तर - मनुष्य के जीवन में पोशाक की असम भूमिका होती है। मनुष्य की परचान पोशाक से ती होती है। यह हमें समान में अधिकार दिलारी है तथा हमी निश्चिम्त करती है। यह मन्द्रशें की विक्रिक्त श्रेणियों में कोंट देती है। भेद-भाव उत्पंत्त कराती प्रमार पीक्षाक हमारे लिए कब लंदान और अड़चन कम जाती है? उत्तर- व्यष्ट्रमुल्य पोशांक हमें नीनी अकदूर समांज की निचली ब्रेणियों की अनुस्ति की समझाने में वंद्यान व अड़नान बन जारी है। क्यों कि यह हमें अभिजात वर्ग व अमीरी का कीया कराती है। मानव-मानव में दूरिशों लढ़ाने का काम करती है। इस सकार नियम पारिस्थानियों में हमारी पोबाड हीं लीने झकने से रोके रखती है। प्रमं 3. भिरतक उस रूजी के रोने का कार्ष कमों नहीं जान पामा ? उत्तर - भिरक भी एक संवदनशील पानी भा। जब उसमें उस स्वर्ष्ट्र में केन्नेनाली स्त्री ही पुरनों पर सिर रखकर रोते हेरना और लाजार में रवड़े सीजीं का उस स्त्री के संबंध में खुनापूर्ण असे करते हरेवा ती उसका मन भी दृश्यी ही उहाँ। वह भी उस स्त्री के दृश्य के कारण की जानना चाहा। परम् उसकी कीमती पीत्राक उसमें कुकावर अने गई। असालिए वर उसके समीप बैदकर उसकी द्वारवद दियारी और में जान प्रमयः भगवामा अपने परिवार का मिर्वाह केरी करता था। ? उत्तर- भगवामा अहर के पास डेंद्र बीचा भर ज़मीन में कहिंगारी करके उसीं रवरक्षीं ही खेती कर अपने परिवार का जीवन निर्वाह करता था। रवरकानीं की उत्तिया काजार में उसकी माँ वैढ जाती प्रमंड. लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन ही खुदिया खरकूर्न केन्यने क्सी जल पड़ी ? उट्टर- कुदिया का सक्तमांत्र कमात्र केटा रूप हंश से मर पुका था।









\*\*\*\*\*\*